गाय व भैंसों के संक्रामक रोग: कारण, इलाज एवं बचाव

पल्लवी मौदगिल, रेणु गुप्ता, रमेश कुमार एवं नरेश जिन्दल

पशु जन स्वास्थ्य एवं जानपादिक रोग विज्ञान विभाग
पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय
लाला लाजपत राय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
हिसार (हरियाणा)

विभिन्न प्रकार के कीटाणु, विषाणु व परजीवी गाय व भैंसों में अनेकों प्रकार के संक्रामक रोगों का कारण बनते हैं। संक्रामक रोग एक पशु से दूसरे में बहुत तेजी से फैलते हैं। गाय व भैंसों के प्रमुख संक्रामक रोगों का विवरण नीचे दिया गया है :

गलघोटू रोग (एच.एस.)

कारण

पास्चूरेला जीवाणु

लक्षण

तेज बुखार, सुस्ती, भूख न लगना, सांस की दिक्कत (मुँह खोलकर सांस लेना), कई पशुओं के गले में सूजन। बीमारी अधिकतर छोटे जानवरों (6 महीने से 2 साल तक) से शुरू होती है।

भैंस के गले में सूजन

मुहं खोलकर सांस लेना

निदान

प्रयोगशाला में खून की जांच, कल्चर, पी.सी.आर. या चूहों में इजेंक्शन द्वारा। मरे हुए पशु में सेप्टीसीमीया, सांस की नली में झाग।

इलाज एवं बचाव

- बीमार पशुओं को तुरन्त स्वस्थ पशुओं से अलग करें।
- पशुओं का इलाज पशु चिकित्सक की सलाह से कराएँ।
- बीमार पशुओं का दाना व पानी स्वस्थ पशुओं को न दें।
- बचाव के लिए एफ.एम.डी.–एच.एस. कम्बाइंड वैक्सीन 6 महीने के अंतराल पर 4 महीने से ऊपर के पशुओं में जरूर लगवाएँ।
- इस बीमारी से मृत पशुओं को खुले में न फैंके।

मुँह–खुर रोग (एफ.एम.डी.)

कारण

एफ.एम.डी. विषाणु

लक्षण

तेज बुखार, जीभ, होंठ, मसूढ़ों, थनों व खुरों के बीच फफोले, मुँह से धागे की तरह लार टपकना, लंगड़ापन आना। कम उम्र व दूध पीने वाले पशुओं का बिना किसी लक्षण के अचानक मरना।

गाय के मुहं में छाले

गाय के खुरों के बीच छाले/ज़ख्म

इलाज एवं बचाव

- रोगी पशु को स्वस्थ पशु से अलग रखें।
- पशु चिकित्सक के परामर्श से पशुओं का इलाज कराएँ।
- बीमार पशुओं को पानी पिलाने के लिए सामुहिक जोहड़ आदि में न लेकर जाएं।
- बीमारी आने के बाद पशुओं को न बेचें।
- पशु के मुँह व खुर के घावों को लाल दवाई के घोल से धोएँ व एंटिसेप्टिक क्रीम का प्रयोग करें।
- बचाव के लिए साल में दो बार एफ.एम.डी. – एच. एस. कम्बाइंड वैक्सीन 6 महीने के अंतराल पर 4 महीने से ऊपर के पशुओं में जरूर लगवाएँ।

अधिक जानकारी क लिए संपर्क करें:
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष
पशु जन स्वास्थ्य एवं जानपादिक रोग विज्ञान विभाग
लाला लाजपत राय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
हिसार (हरियाणा)–125004

मुर्गियों में बीमारियाँ : कारण, बचाव एवं रोकथाम

पल्लवी मौदगिल, रेणु गुप्ता, रमेश कुमार एवं नरेश जिन्दल

पशु जन स्वास्थ्य एवं जानपादिक रोग विज्ञान विभाग
पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय
लाला लाजपत राय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
हिसार (हरियाणा)

अधिक जानकारी क लिए संपर्क करें:
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष
पशु जन स्वास्थ्य एवं जानपादिक रोग विज्ञान विभाग
लाला लाजपत राय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
हिसार (हरियाणा)–125004

नाक से स्त्राव **आँख में सूजन** **सुस्त पक्षी**

बचाव एवं रोकथाम

नियमित रूप से विषाणुनाशक दवाओं का छिड़काव करें। ज्यादा सर्दी एवं गर्मी से बचाव।

बचाव के टीके

- 4–5 दिन पर आई.बी. एवं आर.डी. का टीका आंख या पानी में दें।

बीमारी होने पर

- विषाणुनाशक दवाओं का छिड़काव एवं पीने के पानी में जीवाणुनाशक दवाएँ जैसे क्लोरीन आदि का प्रयोग करें।
- मरे हुए पक्षियों को गहरे गड़ढ़े में दबाएँ। कभी भी मृत पक्षियों को खूले में न फेंके। ऐसा करने पर ये दूसरे फार्मों एवं जंगली पक्षियों में बीमारी का कारण बन सकते हैं।
- रोग ग्रसित फार्म से देखभाल करने वाले व्यक्तियों की आवाजाही पूर्ण रूप से प्रतिबंधित करें।

रानीखेत रोग (न्यू कासल रोग)

कारण

रानीखेत विषाणु। सभी उम्र की मुर्गियाँ ग्रसित हो सकती हैं। जंगली पक्षियों में भी यह रोग होता है।

लक्षण

तीन प्रकार की बीमारी विषाणु के स्ट्रेन के अनुसार। सांस की दिक्कत, हरे रंग के दस्त, आंख सूजना, गर्दन घुमना, अण्डे वाली मुर्गियों में अण्डे का उत्पादन गिरना तथा लंगड़ापन, मरे हुए पक्षियों में सांस की नली में लाली, प्रोवैन्ट्रीकुलस में खून के धब्बे व आंत में अल्सर मिलते है। इस बीमारी से मृत्यु दर काफी अधिक रहती है।

रोग ग्रसीत मुर्गी की गर्दन घुमना **हरे रंग के दस्त**

बचाव एवं रोकथाम

काफी हद तक टीकाकरण से बीमारी को रोका जा सकता हैं। बचाव के टीके नियमित लगवाएं।

- पहला टीका 4–5 दिन की उम्र में।
- दूसरा टीका 21–22 दिन की उम्र में।
- बी आने पर मृत पक्षियों का खुले में न फैंके।
- शैड में विषाणुनाशक दवाओं का छिड़काव नियमित तौर पर करें।
- पक्षियों की बीठें शैड के पास एकत्रित न करें। शैड की साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें।

गम्बोरो रोग (आई.बी.डी.)

कारण

बिरना विषाणु। ज्यादातर 3–6 हफ्ते की उम्र में प्रकोप।

लक्षण

सुस्ती, तेज बुखार, झालदार पंख, सफेद–पीले दस्त एवं मृत्यु दर में बढ़ोतरी जो 3–4 दिन तक बढ़ती जाती है। मरे हुए पक्षियों की टांगों एवं छाती की मांसपेशियों में खून के धब्बे, बरसा में सूजन।

निदान

लक्षण, पोस्टमार्टम एवं पी.सी.आर जाँच द्वारा विषाणु का पता।

बचाव एवं रोकथाम

- बचाव का प्रथम टीका 12–14 दिन की उम्र में आँख में डालें या पानी में पिलाएं। टीका देते समय इस बात का ध्यान रखें की पानी में कोई ओर दवा न हो।
- बीमारी आने पर फार्म में विषाणुनाशक दवाओं का छिड़काव करें।
- मरे हुए पक्षियों को गड़ढ़े में दबाएँ।

मुर्गियों में सांस की बीमारी (आर.डी.सी.)

कारण

विषाणु (एवियन इनफ्लूएन्जा, इन्फैक्शियस ब्रोंकाईटिस, रानीखेत), माइकोप्लाजमा एवं ई. कोलाई का मिला जुला प्रकोप। ज्यादा गर्मी या ज्यादा सर्दी में अधिक प्रकोप।

लक्षण

यह रोग किसी भी उम्र की मुर्गियों में हो सकता है।

आँखों में सूजन, सुस्ती, सांस लेने में कठिनाई, नाक से स्त्राव, अत्याधिक मृत्यु दर जो 5–7 दिन तक बढ़ती जाती है। मरी हुई मुर्गियों के लीवर, फेफड़ों एवं दिल पर सफेद झिल्ली, आंत में सूजन, सांस की नली में लाली आदि।

सूअरों के मुख्य रोगः कारण, इलाज एवं बचाव

रमेश कुमार, पल्लवी मौदगिल, रेणु गुप्ता एवं नरेश जिन्दल

पशु जन स्वास्थ्य एवं जानपादिक रोग विज्ञान विभाग
पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय
लाला लाजपत राय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
हिसार (हरियाणा)

विभिन्न प्रकार के कीटाणु, विषाणु व परजीवी सूअरों में अनेकों प्रकार के संक्रामक रोग करते हैं। संक्रामक होने के कारण ये रोग बड़ी तीव्रता से एक पशु से दूसरे में फैलते हैं। सूअरों के प्रमुख संक्रामक रोग इस प्रकार हैं :

सुकर ज्वर (स्वाइन फीवर)

कारण

स्वाइन फीवर विषाणु

लक्षण

बीमार सूअरों में तेज बुखार, सुस्ती, खांसी, दस्त, शरीर/चमड़ी का नीला होना, आंखो में गीड चिपकना, लड़खड़ा कर चलना। मरे हुए पशुओं की आंत में बटन की तरह अल्सर, गुर्दों में खून के धब्बे।

सुकर के मुहं, पेट और आँख के चारों ओर नीलापन

निदान

लक्षण, शव–निरीक्षण, पी.सी.आर. व सेल कल्चर में विषाणु मिलने पर।

इलाज व बचाव

- बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से तुरंत अलग करें। अगर हो सके तो जो व्यक्ति बीमार पशु की देखभाल करता हो, वह स्वस्थ पशु की देखभाल न करे।
- इलाज के लिए पशु चिकित्सक से परामर्श लें।
- विषाणुनाशक दवाओं का छिड़काव पशु बाड़े में करें।
- मृत पशुओं को खुले में न फेंकें व इन्हें गहरे गढ़े में दबाएँ।
- बीमारी आने के बाद स्वस्थ व बीमार पशुओं को न बेचें।
- एक महीने से ऊपर के सभी पशुओं को बचाव के टीके लगवाएँ।
- नए खरीदे हुए पशुओं का कम से कम 15 दिन तक अलग बाड़े में रखें।

माता रोग

कारण

स्वाइन पोक्स विषाणु

लक्षण

तेज बुखार, सूअरों का सुस्त होना, शरीर के ऊपर छाले व चितके बनना जो बाद में फुटकर खरुंड बन जाते हैं। पशु के मुंह व आँखों के चारों ओर, टांगों, पेट इत्यादि पर छाले।

सुकर के शरीर के ऊपर छाले व चितके

निदान

लक्षण, शव–निरीक्षण, पी.सी.आर. व सेल कल्चर में वाइरस मिलने पर।

इलाज व बचाव

- बीमार पशु को स्वस्थ पशु से अलग करें व तुरंत पशु चिकित्सक से परामर्श लें।
- बीमार पशु का खानपान अलग से करना। घावों को लाल दवा के घोल से धोएँ व एंटिसेप्टिक क्रीम का प्रयोग करें।
- पशु बाड़े को साफ व सूखा रखें तथा मच्छर–मक्खियों व अन्य परजीवियों से बचाव करें जिससे कि बीमार पशुओं के घावों में कीड़े पड़ने की आशंका कम हो जाये।
- पशु बाड़े में विषाणुनाशक दवाओं का छिड़काव करें।
- बीमारी आने के बाद स्वस्थ व बीमार पशुओं को न बेचें।
- नए खरीदे हुए पशुओं को 15 दिन तक अलग बाड़े में रखें।

मुँह–खुर रोग (एफ.एम.डी.)

कारण

एफ.एम.डी. विषाणु

लक्षण

तेज बुखार, मुंह, थूथनी, जीभ, खुरों व थनों पर छाले, लंगड़ापन। छोटे बच्चों में इस बीमारी के साथ साथ अन्य रोगों से मृत्यु की संभावना बढ़ जाती है।

सुकर के खुर, पेट, थनों व थुथनी पर छाले

निदान

लक्षण, एलाइज़ा और पी.सी.आर. द्वारा जाँच

इलाज व बचाव

- रोगी पशु को स्वस्थ पशु से अलग करें। जिस जगह पर रोगी पशु की लार गिरती हो वहाँ पर लाल दवाई का घोल डालें।
- पशु चिकित्सक के परामर्श से पशुओं का इलाज जरूर कराएँ।
- रोग ग्रसित सुअर फार्म से पशुओं व मनुष्यों की आवाजाही पूर्णरूप से प्रतिबंधित करें।
- पशु के मुँह व खुर के घावों को लाल दवाई के घोल से धोएँ व एंटिसेप्टिक क्रीम का प्रयोग करें।
- बचाव के लिए एफ.एम.डी. वैक्सीन 6 महीने के अंतराल पर 3 महीने से ऊपर के पशुओं में जरूर लगवाएँ।

अधिक जानकारी क लिए संपर्क करें:
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष
पशु जन स्वास्थ्य एवं जानपादिक रोग विज्ञान विभाग
लाला लाजपत राय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
हिसार (हरियाणा)–125004

भेड़ एवं बकरियों के मुख्य रोग: कारण, रोकथाम एवं बचाव

रेणु गुप्ता, पल्लवी मौदगिल, रमेश कुमार एवं नरेश जिन्दल

पशु जन स्वास्थ्य एवं जानपादिक रोग विज्ञान विभाग
पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय
लाला लाजपत राय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
हिसार (हरियाणा)

भेड़ों एवं बकरियों की कुछ बीमारियां जानलेवा होती हैं। समय पर अपने पशुओं का टीकाकरण करवा कर इनसे बचा जा सकता है :

पी.पी.आर. (मोक) बीमारी

कारण

पी. पी. आर. विषाणु

लक्षण

बकरियों तथा छोटे मेमनों में अधिक प्रकोप। सुस्ती, नाक से स्त्राव, मुंह से बदबु, जीभ पर सफेद पपड़ी, सांस की समस्या, तेज बुखार, दस्त, मुंह में छाले।

नाक से स्त्राव

जीभ पर सफेद पपड़ी

निदान

लक्षण, पोस्ट–मोर्टम तथा वायरस के लिए पी. सी. आर. द्वारा परीक्षण।

रोकथाम एवं बचाव

- बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से तुरन्त अलग करें एवं इलाज के लिए पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
- इस रोग से ग्रसित पशु को चराई पर न लेकर जाएं।
- बचाव के टीके नियमित लगवाएँ।

फड़किया (एंटेरोटोक्सिमिया) रोग

कारण

क्लोसट्रिडियम जीवाणु। फसल कटाई के बाद खेतों में बचा हुआ अनाज ज्यादा मात्रा में खाने से।

लक्षण

खाना छोड़ना, अफारा, सुस्ती, दस्त लगना, चक्कर काटना। पेट दर्द के लक्षण जैसे बार–बार खड़े होना और बैठना, पेट पर लात मारना और कराहना। भेड़ों एवं छोटे जानवरों में अधिक प्रकोप। इस रोग से ग्रसित पशुओं में मृत्युदर काफी अधिक रहती है। कभी–कभी इस रोग से पशु की मृत्यु लक्षण आने के आधे घण्टे में भी हो सकती है।

मुहं से झाग

अफारा

निदान

लक्षण, पोस्ट– मोर्टम, जीवाणु की कल्चर या पी.सी.आर. द्वारा जाँच।

रोकथाम एवं बचाव

- फसल कटाई के बाद खेतों में पशुओं की चराई नियंत्रित करें
- इलाज के लिए पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें।
- बचाव का टीका 1 माह या अधिक उम्र के पशुओं को लगवाएं। इसके बाद हर छः महीने में टीका लगवाएं।

माता रोग (चेचक)

कारण

चेचक का विषाणु

लक्षण

तेज बुखार, नाक से गाढ़ा स्त्राव, खांसी, पेट के निचले हिस्से में जहां ऊन नहीं होती तथा कान पर फफोले जो बाद में सूखकर पपड़ी/चितके बन जाते हैं। मृत्यु दर 5–10 प्रतिशत या अधिक।

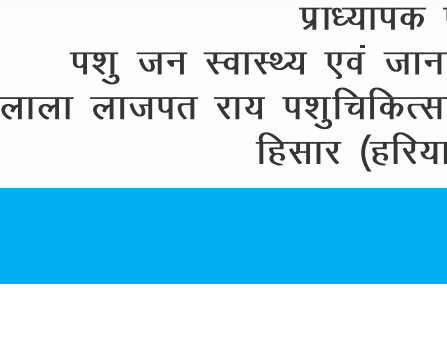

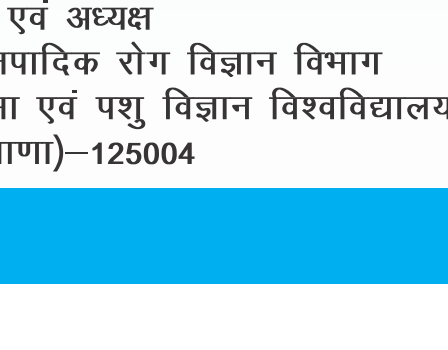

चमडी पर चितके व फफोले

निदान

लक्षण, प्रयोगशाला में पपड़ी की पी. सी. आर. जाँच।

रोकथाम एवं बचाव

- बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से तुरन्त अलग करें एवं इलाज के लिए पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
- इस रोग से ग्रसित पशु को चराई पर न लेकर जाएं।
- बचाव के टीके नियमित लगवाएँ।

अधिक जानकारी क लिए संपर्क करें:
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष
पशु जन स्वास्थ्य एवं जानपादिक रोग विज्ञान विभाग
लाला लाजपत राय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
हिसार (हरियाणा)–125004